1 तीमुथियुस की एक रुपरेखा

I. मसीह की व्यवस्था की शिक्षा ईमानदारी से देनी चाहिए (अध्याय 1)
   क. खरी शिक्षा का महत्व (1:3-11)
      1. मसीह की व्यवस्था में मिलावट की गई (1:3, 4)
      2. मसीह की व्यवस्था इस्तेमाल की गई (1:5)
      3. मसीह की व्यवस्था का दुरुपयोग हुआ (1:6, 7)
      4. व्यवस्था (1:7-11)
   ख. छुटकारा पाया हुआ पापी (1:12-17)
      1. आभार मानने वाला सेवक (1:12)
      2. एक पूर्व विद्रोही (1:13)
      3. परमेश्वर के अनुग्रह का सजीव चित्रण (1:14-16)
      4. परमेश्वर को एक भेंट (1:17)
   ग. निर्णय लेने की मांग (1:18-20)
      1. ''अच्छी कुश्ती लड़'' (1:18, 19)
      2. शैतान के आगे झुकना (1:20)

II. मसीह की व्यवस्था जीने के लिए एक जीवन दिखाती है (अध्याय 2)
   क. प्रार्थना की सर्वश्रेष्ठता (2:1, 2)
      1. जीवन के हर क्षेत्र के लिए प्रार्थना (2:1क)
      2. सब लोगों के लिए प्रार्थना (2:1ख, 2क)
      3. फसाद-रहित, झगड़ा-रहित माहौल के लिए प्रार्थना (2:2ख, ग)
   ख. एक योजना का प्रबन्ध (2:3-7)
      1. सब लोगों के लिए एक योजना (2:3, 4)
      2. एक स्रोत के माध्यम से एक योजना (2:5)
      3. एक ही उद्धारकर्ज़ा की योजना (2:6)
      4. एक सुसमाचार प्रचारक, पौलुस द्वारा घोषित एक योजना (2:7)
   ग. पुरुषों तथा स्त्रियों के लिए नमूना (2:8-15)
      1. पुरुषों का ढंग (2:8)
      2. स्त्रियों का ढंग (2:9, 10)
      3. स्त्रियों की अधीनता (2:11-14)
      4. स्त्रियों को एक श्रद्धांजलि (2:15)

III. मसीह की व्यवस्था से कलीसिया की सज़्भाल होती है (अध्याय 3)
   क. कलीसिया के लिए सज़्भाल - अध्यक्ष (रखवाले) (3:1-7)
      1. उनकी स्थिति का वर्णन किया गया (3:1)

2. योग्यताएं बताई गईं (3:2-7)

ख. कलीसिया के लिए सज़्भाल - डीकन (3:8-13)

1. योग्यताएं बताई गईं (3:8, 10, 12)
2. विशेष सेवक स्त्रियां (3:11)
3. काम और प्रतिफल (3:13)

ग. कलीसिया के लिए सज़्भाल - एक निष्कर्ष (3:14-16)

1. हमारा अपना बर्ताव कैसा हो (3:14, 15क)
2. कलीसिया को कैसे देखें (3:15ख)
3. कलीसिया का आत्मविश्वास (3:16)

IV. मसीह की व्यवस्था हमें उसके नमूने का पालन करने की शिक्षा देती है (अध्याय 4)

क. विश्वास से गिरने की योजना (4:1-5)

1. उनके भटक जाने की निश्चितता (4:1क)
2. ऐसा होने का कारण (4:1ख, 2)
3. शिक्षा में बिगाड़ के बारे में स्पष्टता से बताया गया (4:3-5)

ख. प्रचारक की तैयारी (4:6-8)

1. एक ढंग और एक समस्या (4:6, 7)
2. पीछा करने योग्य लाभदायक बात (4:8)

ग. प्रेरितों का मापदण्ड (4:9-12क)

1. इन लोगों का स्वभाव (4:10)
2. पूरी की जाने वाली आवश्यकता (4:11, 12क)

घ. प्रचारक का संक्षिप्त जीवन-चरित्र व उद्देश्य (4:12ख-16)

1. उसका स्वभाव (4:12ख)
2. उसका चाल चलन (4:13)
3. उसका ध्यान (4:14)
4. उसका अभिषेक (4:15, 16)

V. मसीह की व्यवस्था मसीही लोगों के आपस में सज़्मान की मांग करती है (5:1-6:2)

क. हर युग के लिए सज़्मान (5:1, 2)

ख. विधवाओं के लिए सज़्मान (5:3-16)

1. विधवा की सहायता कौन करे (5:4, 16)
2. विधवा को ज़्या करना चाहिए (5:5)
3. विधवा को ज़्या नहीं करना चाहिए (5:6, 7)
4. अनदेखी की चेतावनी (5:8)
5. कलीसिया द्वारा विधवा की सज़्भाल (5:9, 10)
6. लड़खड़ाकर गिर जाने वाली विधवा (5:11-13)
7. एक जवान विधवा के लिए विकल्प (5:14, 15)

ग. ऐल्डरों या प्राचीनों के लिए विशेष सम्मान (5:17-25)
1. की जाने वाली आत्मिक सेवा (5:17)
2. भाइयों के लिए समर्थन देने का मन होना (5:17-22)
क. जब कोई ऐल्डर कठिन परिश्रम करता है (5:17, 18)
ख. किसी ऐल्डर के पाप करने पर (5:19, 20)
ग. किसी ऐल्डर के चुने जाने के समय (5:21, 22)
3. तीमुथियुस के स्वास्थ्य के लिए संचित परामर्श (5:23)
4. पाप के परिणाम बुरे हैं और उनसे बचा नहीं जा सकता (5:24, 25)
घ. दासों और स्वामियों के लिए सम्मान (6:1, 2)

VI. समस्याओं और प्राथमिकताओं पर ध्यान दिलाना (6:3-21)
क. झूठी शिक्षा देने वाले का चित्रण (6:3-5)
1. उसकी चालाकियां (6:4क)
2. उसका फल (6:4ख, 5)
ख. भक्ति और धन का सम्बन्ध (6:6-11क)
1. लाभ देने वाली प्राथमिकता (6:6-8)
2. महंगी पड़ने वाली प्राथमिकता (6:9-11क)
ग. तीमुथियुस को गंभीरतापूर्ण ताड़ना दी गई (6:11ख-16)
1. इस्तेमाल किए जाने वाले सिद्धांत (6:11ख)
2. मानने के लिए आदर्श (6:12-14क)
3. प्रतिज्ञा किए हुए लाभ (6:14ख-16)
घ. धनी लोगों के लिए सिफारिशें (6:17-19)
ङ अन्तिम आग्रह (6:20, 21)